# B.A. (Part I) EXAMINATION, 2018

## हिन्दी साहित्य

## द्वितीय प्रश्न-पत्र–( कहानी एवं उपन्यास )

**(For Non-Collegiate Candidates)**

Time Allowed : Three Hours Maximum Marks : 100

1. निम्नलिखित अवतरणों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए तथा आवश्यकतानुसार साहित्यिक टिप्पणी भी कीजिए :

(क) सुषमा ने मेज़ पर रखी पीतल की तख्ती पर फिर एक बार उँगली फेरी। नई चमकी तख्ती पर उसके नाम के अक्षर उभरे हुए थे। सुषमा को अपना नाम अनायास ही बहुत मीठा और संगीतमय लग आया। उसने नेम-प्लेट एक ओर सरका दी और ट्रे में रखे पत्रों के ढेर को देखने लगी। वह अचानक ही अपने पद की गरिमा से अभिभूत हो चिक के बाहर देख उठी। चिक की नई, पीली-तीलियों के पार एक बहुत मोहक, आकर्षक संसार बिखरा हुआ था-रंगी दुपट्टों की झलक, अचिंतित युवा स्वरों का हास्य और भोले स्वप्निल चेहरे! बाहर चपरासी स्टूल पर बैठा था और खाकी वर्दी कभी-कभी झलक जाती थी। 10

**अथवा**

(ख) एक ऐसी सुबह, जब कि पानी बरस कर रुक गया था, रीते मेघ हवा के साथ उड़ने लगे थे और नन्हें पौधों की पत्तियों पर से पानी की बूँदें नीचे फिसल रही थीं, सुषमा अपने ऑफिस में आई। अभी घंटा बजने में काफी देर थी। खाली पड़े हुए बरामदे में कभी-कभी, जल्दी आ गई लड़कियों की हँसी गूँज उठती थी और हँसी की वे हिलोरें सुषमा को छू-छूकर लौट जातीं। सुषमा का मन बड़ा शांत था। पिछले सप्ताह उसने काफी काम किया था और अब मन में सहज संतोष था। 10

(ख) मेरे मन में उस समय तरह-तरह के सिद्धान्त आए। मैंने स्थिर किया कि अपराध के प्रति करुणा ही होना चाहिए। रोष का अधिकार नहीं है। प्रेम से ही अपराध-वृत्ति को जीजा जा सकता है। आतंक से उसे दबावा ठीक नहीं है। बालक का स्वभाव कोमल होता है और सदा ही उससे स्नेह से व्यवहार करना चाहिए। 10

**अथवा**

"चालाक तो बड़े हो पर माँझे का लहना, इतने बरस लपटन साहब के साथ रहा है। उसे चकमा देने के लिए चार आँखें चाहिए। तीन महिने हुए एक तुरकी मौलवी मेरे ग़ाँव आया था। औरतों को बच्चे होने के ताबीज़ बाँटता था और बच्चों को दवाई देता था। चौधरी के बड़ के नीचे मंजा बिछाकर हुक्का पीता रहता था और कहता था कि जर्मनीवाले बड़े पंडित हैं। वेद पढ़-पढ़ कर उसमें से विमान चलाने की विद्या जान गए हैं। गौर को नहीं मारते। हिन्दुस्तान में आ जाएँगे तो गोहत्या बन्द कर देंगे। मंडी के बनियों को बहकाता कि डाकखाने से रुपया निकाल लो। सरकार का राज्य जानेवाला है। डाक-बाबू पोल्हूराम भी डर गया था।" 10

(ग) नौकरी में ओहदे की ओर ध्यान मत देना, यह तो पीर की मजार है। निगाह चढ़ावे और चादर पर रखनी चाहिए। ऐसा काम ढूँढ़ना जहाँ कुछ ऊपरी आय हो। मासिक वेतन तो पूर्णमासी का चाँद है, जो एक दिन दिखाई देता है और घटते-घटते लुप्त हो जाता है। ऊपरी आय बहता हुआ स्रोत है जिससे सदैव प्यास बुझती है। वेतन मनुष्य देता है, इसी से उसमें वृद्धि नहीं होती। ऊपरी आमदनी ईश्वर देता है इसी से उसकी बरकत होती है, तुम स्वयं विद्वान हो, तुम्हें क्या समझाऊँ। 10

**अथवा**

आकाश में रंग-बिरंगे फूलों की घटाओं के समान उड़ते हुए और वीणा, वंशी, मुरज, जलतरंग आदि का वृन्दवादन (ऑरकैस्ट्रा) बजाते हुए पक्षी कितने सुन्दर जान पड़ते हैं। मनुष्यने बन्दूक उठाई, निशाना साधा और कई गाते-उड़ते पक्षी धरती पर ढेले के समान आ गिरे। किसी की लाल-पीली चोंचवाली गर्दन टूट गई है, किसी के पीले सुन्दर पंजे टेढ़े हो गए हैं और किसी के इन्द्रधनुषी पंख बिखर गए हैं। क्षत-विक्षत रक्तस्नात उन मृत-अर्धमृत लघु गीतों में न अब संगीत है; न सौन्दर्य, परन्तु तब भी मारने वाला अपनी सफलता पर नाच उठता है। 10

(घ) ''कौन निराला ? निराला इज़ डेड!'' और दूसरी ओर दृढ़ विश्वासपूर्वक 'हिन्दी के सुमनों के प्रति' सम्बोधित होकर एक आहत किन्तु अखण्ड आत्मविश्वास के साथ यह भी कह सकते थे, ''मैं ही बसन्त का अग्रदूत''। सचमुच बसंत पंचमी के दिन जन्म लेने वाले निराला हिन्दी काव्य के बसंत के अग्रदूत थे। लेकिन अब जब वह नहीं हैं तो उनकी कविताएँ बार-बार पढ़ते हुए मेरा मन उनकी इस आत्मविश्वास भरी उक्ति पर न अटककर उनके 'तुलसीदास' की कुछ पंक्तियों पर ही अटकता है जहाँ मानो उनका कवि भवितव्यदर्शी हो उठता है-उस भवितव्य को देख लेता है जो खण्डकाव्य के नायक तुलसीदास का नहीं, उसके रचयिता निराला का ही है। 10

**अथवा**

सूरज डूबने लगा और धीरे-धीरे ग्लेशियरों में पिघली केसर बहने लगी। बर्फ कमल के लाल फूलों में बदलने लगी, घाटियाँ गहरी पीली हो गयीं। अँधेरा होने लगा तो हम उठे और हाथ-मुँह धोने और चाय पीने में लगे। पर सब चुपचाप थे, गुमसुम, जैसे सबका कुछ छिन गया हो, या शायद सबको कुछ मिल गया हो जिसे अन्दर-ही-अन्दर सहेजने में सब आत्मलीन हों या अपने में डूब गये हों। थोड़ी देर में चाँद निकला और हम फिर बाहर निकले, इस बार सब शान्त था। जैसे हिम सो रहा हो। 10

2. 'पचपन खंभे लाल दीवारें' उपन्यास में एक भारतीय नारी की सामाजिक-आर्थिक विवशताओं से जन्मी मानसिक यंत्रणा का बड़ा ही मार्मिक चित्रण हुआ है।

**अथवा**

औपन्यासिक तत्त्वों के आधार पर 'पचपन खंभे लाल दीवारें' उपन्यास की समीक्षा कीजिए। 15

3. 'गदल' कहानी का संक्षिप्त परिचय देते हुए इसकी नायिका 'गदल' के चरित्र का उद्घाटन कीजिए।

**अथवा**

स्पष्ट कीजिए कि शेखर जोशी ने 'दाज्यू' कहानी में व्यक्ति की स्वार्थपरता एवं सम्बन्धों के खोखलेपन को बहुत सुन्दरता से उजागर किया है। 15

4. महादेवी वर्मा के रेखाचित्र 'सोना' का सारांश अपने शब्दों में लिखिए।

**अथवा**

'ठेले पर हिमालय' में अपने समय और परिवेश को देखने की एक सजग कोशिश है। स्पष्ट कीजिए। 15

5. हिन्दी उपन्यास की विकास-यात्रा पर प्रकाश डालिए।

**अथवा**

कथा तत्त्वों के आधार पर कहानी और उपन्यास में अन्तर स्पष्ट कीजिए। 15

○○○